शोध पत्र – हिन्दी

मृदुला गर्ग की कहानियों में वर्गजनित कुंठाएँ

* डॉ. संतोष सोलंके

' हिन्दी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

किसी वर्ग का अर्थ ऐसी श्रेणी अथवा प्रकार से है। जिसके अंतर्गत व्यक्ति समूह भी आते है। वर्ग की संकल्पना दलों के सामाजिक भेद पर आधारित है, अतः वर्ग का निर्माण व्यक्ति या समूह के आर्थिक एवं सामाजिक स्तरो की भिन्नता पर आधारित होता है, इस व्यक्ति समूह में कोई किसी की, किसी व्यक्ति की मानसिकता खण्डित होती है। तो उसे हम कुंठाग्रस्त या वर्गजनित कुंठाएँ कह सकते है। प्रारंभ से ही मानव समाज दो वर्गों में विभाजित रहा है। शोषक वर्ग शोषित वर्ग, शोषक और शोषित वर्ग के आपसी संघर्ष सुख की चाहत से कालान्तर में तीसरे वर्ग का जन्म हुआ जिसे मध्य वर्ग कहा जाता है, हर एक वर्ग में प्रत्येक वर्ग में कुछ कुंठाए भी होती है।

1. कितनी कैदें

मृदुला गर्ग जी द्वारा लिखित 'कितनी कैदें' कहानी संग्रह की कहानियों में वर्गजनित कुंठाओं का भी उल्लेख हुआ है। मृदुला जी द्वारा लिखित 'क्षुधा पूर्ति' कहानी की नायक की इच्छा अधूरी रहती है अर्थात उसकी इच्छा का दमन होता है। ''आज वह खायेगा भरपेट, खायेगा तब तक खाता रहेगा जब तक बाहर से आवाज न आया। आज उसने आंखे खोलकर उसने यह भी नहीं देखा कितना खाना बचा है और कितना पेट में चला गया।''[1] हर एक वर्ग में व्यक्ति अपनी समस्याओं का सामना करता है। सामने करते हुए, मेहनत करते हुए, अगर उसके हाथों में असफलता आ जाती है तो वह अपनी असफलताओं के कारण कुंठित हो जाता है, अर्थात उसी जगह उसके साथ उसकी इच्छाओं का दमन हो जाता है, उसके मन में जो इच्छा रहती है वह पूरी नही हो पाती इसलिए वह कुंठित हो जाता है।

'लौटना और लौटना' कहानी का नायक हरीश अमेरिका में नौकरी करता है। वह अपने देश में माता–पिता से मिलने आता है। हरिश के पिताजी कहते है– ''बेटा हमारा दिल तो खैर चाहेगा कि तुम हमारी आंखों के सामने रहो, अपना देश है बेटा कभी न कभी तो लौटाना न। एक तरफ से हरीश कहता है हाँ पिताजी मेरा वहां हमेंशा रहने का इरादा नहीं है। वहाँ के लोग साले सब पैसे के टट्टु है। हिन्दुस्तानियों की बेइज्जती ही बेइज्जती है। में बस पाँच साल और रहुंगा। इतना पैसा जमा हो जाए कि अपना बिजनेस जमा सकूं।''[2] दोनों बाप बेट की इच्छाएँ अपनी–अपनी जगह है, दोनों की इच्छाओं का खण्डन होता है इसी कारण दोनों कुंठाग्रस्त है। हरीश एक अमरिका में रहता हुआ वहाँ की पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगा हुआ एक भारतीय युवक है। हरी बिन्दी कहानी में मृदुला जी ने नायिका की सेक्सजन्य कुंठाओं का उल्लेख किया है। कहानी की यह अनाम नायिका को ''अपने दाम्पत्य जीवन की एकरसता, ऊब उदासी को मिटाने के लिए उसे थ्रिल चाहिए और थिल के लिए चाहिए एक नया साथी। इस नारी की यह स्वेराचारी वृत्ति यहाँ प्रकट हुई है।''[3] वैसे देखा जाए तो कुंठाऐं एक मनोवैज्ञानिक स्थिति भी है। कोई जीवन मूल्य नही इसमें स्थिति का मुल कारण तो व्यग्रता है, इस स्थिति में व्यक्ति के मन पर एक अस्पष्ट सा भय छा जाता है, लेकिन वह उसका ठीक–ठीक विश्लेषण नही कर पाता। ''कितनी कैंदे' कहानी की मीना कॉलेज में पढ़ते समय मादक द्रव्यों के सेवन की लत की शिकार होती है। एक बार नशे की हालत में उसके साथ के लड़के उसके साथ बलात्कार करते है जिसका पता चलने पर उसकी पिटाई की जाती है, पढ़ाई बन्द कर दी जाती हैं, उसका विवाह कर दिया जाता है। वह एक मन्दकाम फ्रिजीड स्त्री हो जाती है। वह सम्भोग में न तो स्वयं आनन्द अनुभव करती है, न अपने पति को सन्तुष्ट कर पाती है। अर्थात पति पत्नी दोनों की इच्छाओं का दमन होता है इसलिए दोनों भी कुंठित हो जाते है, कुण्ठाग्रस्त होते है।''[4]

2. टुकड़ा टुकड़ा आदमी

मृदुला गर्ग जी का यह दूसरा कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में कुल चौदह कहानियाँ संकलित है। 'कितनी कैदे' कहानी संग्रह से मृदुला जी की जो इमेज बनी थी, उससे बिलकुल हटकर यह कहानियाँ हैं। पूँजीपतियों तथा उच्चवर्ग की औपचारिक संस्कृति पर 'टुकड़ा टुकड़ा आदमी', 'दूसरा चमत्कार' तथा 'मधुप पत्रकार' के माध्यम से तिखा प्रहार किया है। 'गुलाब के बगीचे तक' इस कहानी में एक मध्यम वर्गीय व्यक्ति की कहानी है। अर्थात लेखिका मृदुला गर्ग जी का यह कहना है कि वर्गजनित कुंठाएँ है। मृदुला जी ने 'टुकड़ा टुकड़ा आदमी' कहानी में उल्लेख किया है। ''डॉक्टर सुबोध कुमार

एक गांव में सर्वे करने निकलते है, तो वह वहाँ पर निम्न वर्ग के लोग रहते है, गंदले पानी में बहते फफपस लकड़ी के टुकड़े, फटे कागज की नाव और सड़ी सब्जी के कतरने। दभटी हटा लेने पर भी बार–बार वहीं जाकर टीक जाती है, वहीं नंगे मैले, चिपचिपे बच्चे, आंखें में जमा कीच, नाक से बेरोक बहनी सिनक और कीचड़ से लथपथ पांव। डॉ. सुबोध कुमार की पत्नी प्रभा पुछती है, अपने स्वर्ग को छोड़ इतनी जल्दी भाग आये ''प्यार से हंसकर उसने कहा, प्रभा वह स्वर्ग नहीं, नरक है नरक''[5] लेखिका ने निम्न वर्ग के लोगों के जीवन की कहानी का वर्णन किया है। इन लोगों का जीवन कुंठाओं से भरा हुआ है। इस समाज को उच्च वर्ग की सुविधा रहन–सहन कहां मिलता है। लेखिका मदुला गर्ग जी ने 'दो एक फूल' कहानी की नायिका शांतमा की सांसारिक कुंठाओं का चित्रण किया है। शांतम्मा अपनी कहानी डॉ. मालती शर्मा को बताती है। ''उस रात खूब देर से मेरा पति घर लौटा मुझे बाहर अहाते में ला पटका, गालियाँ बकता रहा मेरी पीठ पर दनादन लातें मारने लगा। चुडैल अभी कितने बच्चों को खाएगी, हरामजादी तेरे करम सड़े है, तेरा बदन सड़ा है, तेरा पाप फलता है, बच्चों की देहपर मुझे वह बोलता गया। मेरी सांस आसाम से यह सब तमाशा देखती रही। शरीर से आघात सहते–सहते, शांतमा की मन की व्यथा,तन की यातना से ऊपर उठकर फकीरप्पा शांतम्मा का पति के हृदय की कुंठा से जा मिली।''[6]

3. ग्लेशियर से

''ग्लेसियर से' यह मृदुला जी का तीसरा कहानी संग्रह है। एक नारी लेखिका होने के कारण नारी की कुंठाओं का सूक्ष्म अंकन मृदुला गर्ग ने अपनी कहानी 'तुक', 'खाली', 'ग्लेशियर से' और झुलती कुर्सी कहानियों में किया है। मृदुला जी ने ग्लेशियर से कहानियों में कुंठा का बहुत ही मजेदार वर्णन किया हुआ है। ''श्यामला मिसेज दत्ता को कहती है कि हम दोनों बारामुला पहाड़ों पर रहकर मधुमक्खियां पालें। मुंह पर जाली बांध कर छत्ते में हाथ डालते हैं, शहद चुराऐंगे और बेचेंगे। शहर–शहर नही तो चल हम लोग भेड़ पालें, जम्मू में पठान के खेमों में रहेंगे। सर्दी खत्म होने पर चल देंगे। हर महीने नया पहाड़, नया खेमा, पहले तो लंबी ऊन काटेगें और बेच देंगे, अरे मन हुआ तो भेड़ ही बेच डालेंगे।''[7] श्यामला पुरी की एक भी इच्छा पुरी नही होती, उसकी इस इच्छा का दमन होता है, इसी कारण इस जगह पर कुंठा का जन्म होता है। मृदुला जी की दुसरी कहानी 'तुक' की नायिका कहती है' '' एक मैं हुँ जो पति के दफ्तर से घर लौटने पर उसके चेहरे से अपनी निगाहें हटा नही पाती। उसके चेहरे पर आ रहे हर भाव को पढ़ने की कोशिश करती रहती हूँ में चाय छानकर देती हूँ, कभी नमकीन छिटका देती हूँ। इसपर उसके माथे पर शिकन उभर आती है तो मैं भीतर ही भीतर मर लेती हूँ। एक मैं ही हूँ। बस और कोई औरत यह बेवकूफी नहीं करती।''[8] नायिका की सभी इच्छाऐं अधूरी रहती है, वह अपनी एक भी इच्छा पूरी नहीं कर पाती।

4. दुनिया का कायदा

सन 1983 में प्रकाशित आलोच्य संग्रह में युगीन तथा वर्तमान जीवन की कड़वी–मीठी अनुभुतियाँ चित्रित की गई है। यह कहानी संग्रह मृदुला गर्ग जी के अन्य संग्रह में संग्रहित एक चुनिंदा कहानियों का संकलन है। मृदुला गर्ग जी ने इस कहानी संग्रह में अधिकतर कहानियाँ 'कितनी कैदे' कहानी संग्रह में से ली गई है। सुबह भी अंधेरे से खाली नहीं 'क्षुधापूर्ति' ये दोनों कहानियों किसी भी में नही है। 'दुनिया का कायदा' इस कहानी संग्रह की सबसे लम्बी कहानी है। इस कहानी संग्रह में मृदुला जी ने 'दुनिया का कायदा' कहानी में नारी की सेक्सजनीत कुंठाओं का उल्लेख किया है। ''नायिका के घर पर संगीत बज रहा था वहां की महिला भय से सीहर उठी, दो स्थूल कायाओं के बीच वह फंसी बैठी थी, उठना असंभव था, वह घटना स्थल से भाग जाने को उठने लगी, उसने देखा कमरे में बैठी तमाम औरतें बड़े वीभत्स ढंग से अपने वक्ष और जंघाओं पर हाथों से प्रहार कर रही है, हाय भरी जवानी में मेरी बहु धोखा दे गयी। औरत आदमी बगैर रह सकती है, आदमी औरत बगैर रह नहीं सकता। कमर पर रखा उसका हाथ फिसलकर उसके वक्ष तक आ गया, बात करते–करते उसका हाथ उसके कुल्हे पर जा टीका था, उसके हाथ हटाने का प्रयास किया सफल नहीं हुई। कुछ देर बाद हाथ हटा तो अपनी इच्छा से उसे लगा गालपर सबके सामने तमाचा मार दिया, ऐसा करने पर कमरे का उच्चवर्गीय जनसमूह उसे पागल घोषित कर देगा। इसमें नायिका रक्षा को लगा कि इस कमरे में उसकी अपनी ही देह याचना निर्वस्त्र देह याचना करती घूम रही है।''[9] सेक्सजनित कुंठा वर्गजनित कुंठाओं में ही आता है।

5. डैफोडिल जल रहे है

मृदुला गर्ग जी के इस कहानी संग्रह में केवल तीन लंबी कहानियाँ है। 'डैफोडिल जल रहे है', 'मेरा', 'स्थगित कल'। यह तीनों कहानियाँ मृदुला गर्ग जी के कथा लेखन का सर्वश्रेष्ठ नमूना है। ये तीनों कहानियाँ आधुनिक जीवन की ऐसी समस्याओं को उभारती है जो आज तक अछुती थी। डैफोडिल जल रहे है' कहानी में कश्मीर घाटी के गुलमर्ग के बर्फीले एकांत में घटित दुखद और त्रासद स्थितियों का नारी मन के सूक्ष्म बिन्दुओं का अंकन किया हैं, मृदुला जी की 'मेरा' कहानी में भी आज के मध्यवर्गीय परिवार के नौकरी करने वाले स्त्री–पुरूष

के बीच बच्चे के जन्म की समस्या को लेकर उत्पन्न वर्गजनित कुंठाओं का जीवन चित्रण है। पति, माँ के दबाव में आकर पत्नी 'अबार्शन' करवाने के लिए अस्पताल जाती है। तीसरी कहानी 'स्थगित कल' मृत्युबोध से कुंठित मन के मानसिक संघर्ष को उभारा गया है।

मृदुला गर्ग जी ने डैफोडिल जल रहे है' कहानी में नायिका की दबी हुई कुंठा का चित्रण किया है। ''आज में कुर्सी पर बैठी हूँ, अपने कमरे में फीरोज सुधाकर साथ में ही रहते है, अरे उनसे पूछेगी तो कह देगीं हाँ। पहले भी यही हुआ था। अगर श्रीनगर में कह देती, तबीयत ठीक नहीं है, तो हम लोग गुलमर्ग आते क्यों''[10] जिसके लिए नायिका हर दुख झेल लेती थी और हर सुख छोड़ने को तैयार थी, उसके रहने पर लिखा तो इसलिए कि सुख को थोड़ा बहुत बढ़ा सके वह एक प्रकार से मानसिक कुंठाओं से ग्रस्त है। क्योंकि इच्छाओं के दमन से ही मानसिक कुंठाओं का जन्म होता है। 'मेरा' कहानी की नायिका गीता की कुंठा का चित्रण किया है। महेन्द्र मीना का पति भी कुंठित हैं 'अगर ''वह जानता है अगर यह बच्चा उसका और मीता का स्टूडेंट वीजा बना है। बच्चे को साथ ले जाने का सवाल ही नही उठता।''[11]

संदर्भ ग्रंथ

1. गर्ग मृदुला – क्षुधा पूर्ति (कितनी कैदें), प्रथम संस्करण 1975, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 06
2. गर्ग मृदुला – लौटना और लौटना (कितनी कैदें), पृ.क्र. 26
3. डॉ. अग्रवाल तारा – मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, प्रथम संस्करण 2004, विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 94
4. सिंह पुष्पलता – साहित्य और सामाजिक मूल्य, प्रथम संस्करण 1997, सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 19
5. गर्ग मृदुला – टुकड़ा–टुकड़ा आदमी (टुकड़ा–टुकड़ा आदमी), प्रथम संस्करण 1983, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ.क्र. 88
6. गर्ग मृदुला – दो एक फूल (टुकड़ा–टुकड़ा आदमी), पृ.क्र. 120
7. गर्ग मृदुला – ग्लेशियर से (ग्लेशियर से) प्रथम संस्करण 1983, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ.क्र. 293
8. गर्ग मृदुला – तुक (ग्लेशियर से), पृ.क्र. 326
9. गर्ग मृदुला – दुनिया का कायदा (दुनिया का कायदा), प्रथम संस्करण 1988, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 74
10. गर्ग मृदुला – डैफोडिल जल रहे हैं (डैफोडिल जल रहे हैं) प्रथम संस्करण 1986, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 196
11. गर्ग मृदुला – मेरा (डैफोडिल जल रहे हैं), पृ.क्र. 212